Nalanda Open University, Patna

e-content for B. A/B.Sc Home Science(hons),

Part-3, Paper-7, Unit-7

Topic-Evaluation in Extension: Advantage and Importance of Evaluation, Problems in Evaluation.

Soni kumari, Research Scholar, M. U, Gaya, Counsellor-NOU, Patna.

<u>मूल्यांकन के लाभ एवं महत्व-</u> प्रसार शिक्षण विधियों में मूल्यांकन का अति महत्वपूर्ण स्थान है। इससे यह पता चल जाता है की कार्यक्रम में किस सीमा तक सफलता प्राप्त हुई है असफलताओं के क्या कारण रहे हैं, सफलता प्राप्त करने में किन-किन का सहयोग मिला मूल्यांकन से व्यक्ति किसी ठोस निष्कर्ष पर पहुंच जाता है इससे निर्णय लेने में सुविधा होती है इससे भविष्य में बनाए जाने वाले कार्यक्रम में सहयोग मिलता है।

मूल्यांकन के महत्व निम्नानुसार है-

- प्रत्येक कार्यक्रम को समझने के लिए मूल्यांकन आवश्यक है इसके आधार पर भविष्य की योजनाएं

तैयार की जा सकती हैं तथा दिशा निर्देश प्राप्त किए जा सकते हैं।

- ❖ यह आवश्यकताओ को पहचानने तथा उसकी पूर्ति में मदद करता है।
- ❖ मूल्यांकन से सभी अच्छे एवं कमजोर पक्षों का ज्ञान हो जाता है। कमजोर पक्ष पर बल दे कर कार्यक्रम को सफल बनाया जा सकता है।
- ❖ मूल्यांकन यह कार्य के परिणाम की जानकारी मिलती है। यह कार्य को सुधारने के लिए एक आधार प्रस्तुत करता है।
- ❖ कार्यक्रम करते समय उपयुक्त उपकरण के चयन में मूल्यांकन सहायक होता है।
- ❖ मूल्यांकन कार्यक्रम नियोजन में बेंचमार्क निश्चित करने में सहायक होता है। जैसे- कार्यक्रम, कब, कहां कैसे, किस की सहायता से, किसके लिए आयोजित होगी।

- ❖ कार्यक्रम को चलाने के लिए आंकड़े उपलब्ध हो जाते हैं
- ❖ मूल्यांकन द्वारा प्रशिक्षुओं को मनोबल बढ़ता है तथा अपने काम के प्रति उनका विश्वास जागृत होता है।

<u>मूल्यांकन में समस्याएं-</u> मूल्यांकन करते समय विशेष सावधानी की आवश्यकता होती है पूर्वाग्रहों दुर्भावनापूर्ण हीन भावना तथा कुंठा से ग्रसित होकर जब मूल्यांकन किया जाता है तो उसका परिणाम सही नहीं रहता है अतः मूल्यांकन में गड़बड़ी हो जाती है मूल्यांकन की प्रमुख समस्याएं हैं-

1) किसी भी व्यक्ति के व्यवहार में आये परिवर्तनों को जांचना एवं मूल्यांकन करना इतना सहज नहीं होता है। यह तो रेत में महल खड़ा करने जैसा होता है।अत: ऐसे व्यक्ति को उसके समुदाय का प्रतिनिधि मानकर प्रतिदर्श के

रूप में प्रयोग करता है तो मूल्यांकन में दोष आ जाता है।

2) प्रसार कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य मानव व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाना है। मानव व्यवहार में अध्ययन के लिए प्रश्नावली, अनुसूची, साक्षात्कार अवलोकन आदि का निर्णय स्वयं मूल्यांकन करने वाले द्वारा किया जाता है।अत: उसमें चुक होने की संभावना रहती है।जब मापन विधियां ही अशुद्ध होंगी तो परिणाम भी दोषपूर्ण होगा।

3) तथ्यों का संकलन लोगों द्वारा दिए गए प्रत्युत्तर पर आधारित होता है।यदि लोग सही सूचनाएं नहीं देते हैं तो मूल्यांकन का परिणाम सही नहीं होता।

4) तथ्यों के संकलन में कई समस्याएं आती हैं जैसे लोगों को समय पर नहीं मिलना पूछे गए प्रश्नों का जवाब नहीं देना,टाल देना, मना करना

कार्यक्रम में आदि से अंत तक भाग नहीं लेना और असहयोगात्मक रवैया अपनाना आदि बातें मूल्यांकन में समस्या पैदा करते हैं।

5) मानव व्यवहार में परिवर्तन के अनेक कारण होते हैं तथा उनमें निरंतर परिवर्तन होते रहता है। उसकी कार्य दक्षता ,कार्य निष्पादन शैली तथा जानकारियां आदि अनेक कारकों से प्रभावित होती हैं। इस पर नियंत्रण रखना मुश्किल होता है। अतः मानव व्यवहार का मूल्यांकन करते समय यह जानना कठिन हो जाता है कि व्यक्ति के व्यवहार में जो परिवर्तन आए हैं वह कार्यक्रम के कारण आए हैं या अन्य किन्हीं कारणों से।